

मार्च-अप्रैल माह के मुख्य बागवानी कार्य

हरे कृष्ण*, अरविंद कुमार सिंह**, नृपेन्द्र विक्रम सिंह***, शुभम कुमार तिवारी* और मनोज कुमार सिंह*

मार्च-अप्रैल की द्विमाही के दौरान जहां सदाबहार फलों जैसे आम, अमरूद, लीची, नीबूवर्गीय फल आदि के नए बाग लगाए जा सकते हैं वहीं शीतोष्णवर्गीय फलों तथा कई समशीतोष्ण व उपोष्ण फलों में पुष्पण आरंभ हो जाता है। अतः इस द्विमाही के दौरान जहां बागवानों को पुष्पण के दौरान परागण प्रबंधन करना है वहीं अत्यधिक सिंचाई से भी बचना है। इसके अतिरिक्त फल लगने के बाद आवश्यक सिंचाई का समुचित प्रबंध भी करना है। तो आइये फलन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण ऋतुराज वसंत का स्वागत बागों में किए जाने वाली कृषि क्रियाओं द्वारा कैसे किया जाए, इस विषय पर चर्चा प्रारम्भ करते हैं।

वसंत ऋतु में नई कलिकाएँ प्रस्फुटित होती हैं जबकि पुरानी पत्तियाँ झड़ चुकी होती हैं। इन नवकलिकाओं की वृद्धि के लिए पौधे के अन्य भागों की तुलना में अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा जड़ या तने के ऊतकों में संग्रहित शर्करा से फ्लोएम द्वारा कलिकाओं तक पहुँचती है। जड़ों में संग्रहित शर्करा वसंत के प्रारम्भिक चरण में आहार के स्रोत के रूप में कार्य करती है। परिणामस्वरूप, इस अवधि में फल वृक्षों में वानस्पतिक वृद्धि एवं पुष्पण की प्रक्रिया तेजी से होती है जिससे बागों में की जाने वाली कृषि क्रियाओं की हलचल भी बढ़ जाती है।

आम

आम की अच्छी पैदावार लेने के लिए यह द्विमाही अत्यंत महत्वपूर्ण है। मार्च में आम में पुष्पण के उपरांत फल लगने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। पुष्पण के दौरान किसी भी कीटनाशी का प्रयोग करने से बचें इस अवधि में छिड़काव करने से जहां एक ओर परागण बह जाते हैं वहीं लाभकारी कीटों की मृत्यु भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, पुष्पण के दौरान बागों की सिंचाई भी न करें परंतु फल लगने के तुरंत बाद सिंचाई के समुचित प्रबंध को सुनिश्चित अवश्य करें। इस अवधि में कुछ रोगों एवं कीटों के संक्रमण की आशंका भी बनी रहती है।

चूर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए मार्च के प्रथम सप्ताह में पहला छिड़काव आर्द्रशील गंधक (2 ग्राम प्रति लीटर) से

जब बौर 8 से 10 सें.मी. लंबी हों तब तथा दूसरा छिड़काव 10-15 दिनों के अंतराल पर डिनोकैप (1 मिली प्रति लीटर पानी में) से अवश्य करें। बौर पर **श्यामव्रण** दिखाई देने पर कार्बेण्डाजिम (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। पत्तियों और शाखाओं पर **श्यामव्रण** का प्रकोप होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। **मीली बग** (गुजिया) के बचाव के लिए वृक्षों के तने पर पॉलीथीन की 3 फुट चौड़ी पट्टी बांध दें एवं पौधों की अपेक्षा भूमि पर किसी अंतर्प्रवाही कीटनाशी (मैटासिस्टोक्स या रोगार) का छिड़काव प्रौढ़ कीटों को नष्ट के लिए करें। फलों को **फुदका** या **तेला** से बचाने के लिए डाईमैथोएट (0.5 मिली प्रति लीटर) अथवा बुप्रोफेजीन 25 प्रतिशत एससी (1-2 मिली प्रति लीटर) का छिड़काव करें। अप्रैल माह में **फलमक्खी** से बचाव हेतु प्रपंचों (मेथाइल यूजीनॉल 0.1 प्रतिशत व मैलाथिओन 0.1 प्रतिशत) का

प्रयोग करें। **तना छेदक** व पत्ती काटने वाले कीटों से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफॉस 0.05 प्रतिशत का छिड़काव अप्रैल माह में करें।

अप्रैल में फलों का गिरना भी अत्यधिक होता है। जिसे रोकने के लिए फूल बनने की अवस्था से लेकर फल बनने तक प्लेनोफिक्स का 4.5 मि.ली./लीटर प्रति गैलन की दर से तीन बार छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त, 2 प्रतिशत यूरिया का घोल भी फलों के निंबोली जैसे होने पर (निंबोली अवस्था) पर अथवा 2-3 छिड़काव सूक्ष्म तत्वों के 10-12 दिन के अंतराल पर कर सकते हैं।

आम में **ऊतक क्षय रोग** के नियंत्रण के लिए 0.8 प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव करें। ईट के भट्टों के आसपास के क्षेत्रों में उससे निकलने वाली गैस सल्फर डाई ऑक्साइड के कारण आम में **कोएलिया रोग** होने की आशंका होती है। इससे बचाव हेतु एक प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव अप्रैल के अंतिम सप्ताह में करना चाहिए। अप्रैल माह



आम

*भाकृअप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी-221005, **केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, (केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान), वेजलपुर (गोधरा), गुजरात-389340, ***भाकृअप-राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, एनएच-65, सोलापुर- पुणे राष्ट्रीय राजमार्ग, केगांव, सोलापुर (महाराष्ट्र) -413255

में ही गुच्छा रोग से ग्रसित बौरों को काटकर नष्ट (जलाकर या मिट्टी में गहरा दबाकर) कर देना चाहिए। दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफॉस (2 मिली प्रति लीटर) का छिड़काव करें। इन महीनों में नए लगे पौधों पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। नए लगे पौधों को एक सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई अवश्य दें। लू व गर्मी से बचाने के लिए इन्हें तीन ओर से छप्पर (पुआल) से ढक देना चाहिए। पूर्व की दिशा को थोड़ा खुला रखें जिससे सूर्य का प्रकाश और हवा मिलती रहे। साधारणतः अप्रैल में फलों का विकास तीव्र गति से होता है, अतः नियमित रूप से बाग की सिंचाई 15 दिनों के अंतराल पर अवश्य करें। इस माह आम के बागों में एक वर्ष के वृक्षों के लिए 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फेट व 50 ग्राम पोटाश जो क्रमशः बढ़ाकर 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए प्रति वृक्ष 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फॉस्फेट तथा 500 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें।

केला

मार्च-अप्रैल के महीने में जब तापमान बढ़ने से मिट्टी में नमी की कमी हो जाती है, अच्छी गुणवत्ता के केले की पैदावार लेने के लिए, इस समय खेत में सही सिंचाई प्रबंधन करना चाहिए। सिंचाई 5-6 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए। इस द्विमाही, दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों जैसे कावेरी नदी के किनारों पर मार्च में (रोबस्टा, ड्वार्फ कैवेंडिश, ने पूवान) तथा पालिनी की निचली पहाड़ियों पर अप्रैल में (वान, रास्थली, कारपुरावाल्ली) केले की रोपाई के लिए उपयुक्त है। सूखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को समय-समय पर हटाते रहना चाहिए। ऐसा करने से हवा एवं प्रकाश नीचे तक पहुँचता रहता है, जिससे रोगों और कीटों की संख्या में कमी आती है। अधिकतम उपज के लिए एक समय में कम से कम 13-15 स्वस्थ पत्तियों का होना आवश्यक होता है। यदि पत्तियों या पौधों में किसी भी प्रकार का सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी दिखाई दे तो अविलंब उस कमी को दूर करने के लिए उसका छिड़काव करें।

जब केले की फसल को खुंटी फसल के रूप (रतून फसल) में लेते हैं तो उसमें **आभासी तना बेधक कीट** की समस्या देखने को मिलती है। आभासी तना कीट से ग्रसित पौधे को आभासी तना के आधार से काटें और 100 मिलीलीटर बेवेरिया बेसियाना (3 मिली. प्रति लीटर) या क्लोरपायरीफॉस



केला

(2.5 मिली. प्रति लीटर) + स्टिकिंग एजेंट (1 मिली. प्रति लीटर) से उपचारित करें। इसके अतिरिक्त, इस कीट से बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस (2.5 मिली प्रति लीटर + 1 मिली स्टिकिंग एजेंट) या एजेडिरेक्टिन 1 प्रतिशत (2.5 मिली. प्रति लीटर) 5 महीने पुराने केले के तने पर रगड़कर लगाया जा सकता है। गुच्छों की तुड़ाई के बाद, आभासी तने को 30 सें.मी. लंबाई के टुकड़ों में काटा जा सकता है और कीट को पकड़ने करने के लिए जाल के रूप में उपयोग किया जाता है। इस कीट की उग्रता कम करने के लिए आवश्यक है कि केले के बाग की निराई-गुड़ाई नियमित रूप से की जाए।

मार्च के प्रथम से केले के बाग में साप्ताहिक अंतराल पर सिंचाई करें। केले के बागों में नाइट्रोजन की 25 ग्राम (55 ग्राम यूरिया) मात्रा पौधे से 40-50 सें.मी. दूर गोलाई में डालकर चारों तरफ गुड़ाई कर

मिट्टी में मिला दें तथा सिंचाई कर दें। केवल एक तलवारी पत्ती (भूस्तारी) को छोड़कर पौधे के आधार से निकले वाली अन्य पत्तियों को काट दें, क्योंकि यही भूस्तारी नए पौधे बनाने के लिए सर्वथा उपयुक्त होती है। नाइट्रोजन की 60 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

अमरूद

जिन स्थानों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो वहाँ पर पौधे मार्च में भी लगाये जा सकते हैं। बाग लगाने के लिये तैयार किये गये खेत में निश्चित दूरी पर 60 x 60 x 60 सेंटीमीटर आकार के गड्ढे तैयार कर उन गड्ढों को 25 से 30 किलोग्राम अच्छी तरह तैयार गोबर की खाद, 500 ग्राम सुपर फॉस्फेट तथा 500-1000 ग्राम नीम की खाली अच्छी तरह से मिट्टी में मिलाकर पौधे लगाने के 15 से 20 दिनों पहले भर दें और रोपण से पहले सिंचाई कर देते हैं। इसके पश्चात पौधे की पिंडी के अनुसार गड्ढे को खोदकर उसके बीचो-बीच पौधा लगाकर चारों तरफ से अच्छी तरह दबाकर फिर हल्की सिंचाई कर देते हैं। बाग में पौधे लगाने की दूरी मृदा की उर्वरता, किस्म विशेष एवं जलवायु पर निर्भर करती है। परंतु, सघन बागवानी द्वारा प्रति हैक्टर 500 से 5000 पौधे तक लगाये जा सकते हैं। मार्च माह में पेड़ों के नीचे की भूमि की जुताई कर दें, जिससे कीटों के प्यूपे नष्ट हो जाएँ। यह समय पुराने परंतु अनुत्पादक वृक्षों के जीर्णोद्धार के लिए भी उपयुक्त है। ऐसे वृक्षों को भूमि से 75 सेंटीमीटर की ऊँचाई तक शिरोच्छेदन करें अथवा द्वितीयक शाखाओं को उनके उत्पत्ति बिन्दु से 75 सेंटीमीटर की दूरी तक काटें। इसके अतिरिक्त, विगत फसल ऋतु में विकसित हुये अंतस्थ शाखाओं को 10 से 15 सेंटीमीटर तक काटें। अमरूद की फसल वर्षा व जाड़े के मौसम में आती है। अतः



अमरूद

अच्छी पैदावार के लिए केवल एक फसल लेनी चाहिए। यदि वर्षा वाली फसल लेनी हो तो प्रति पौधा 50 कि.ग्रा. देसी खाद, 1/2 कि.ग्रा. यूरिया, 11/4 कि.ग्रा. सुपर फॉस्फेट और 750 ग्राम पोटाश देनी चाहिए। यदि वर्षा ऋतु में फसल नहीं चाहिए तो इन महीनों में सिंचाई रोक देनी चाहिए तथा 15 मई तक नेप्थेलीन एसिटिक एसिड 800 पी.पी.एम. (8 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में) का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। पहला छिड़काव 50 प्रतिशत पुष्प खुलने पर एवं दूसरा इसके 20 दिन के पश्चात दें। वैकल्पिक रूप से, हाथों द्वारा भी फूलों को तोड़कर हटा सकते हैं। नयी वृद्धि को एक जोड़ी पत्तियों तक कर्तित करने से भी वर्षा ऋतु की फसल को रोकने में सहायता मिलती है।

अमरूद में **उकठा रोग** के नियंत्रण के लिए 20-30 ग्राम बाविस्टिन 10-15 लीटर पानी में मिलाकर प्रति पौधा जड़ों में प्रयोग करें। एन्थ्रेक्नोज (श्याम व्रण) रोग के प्रभाव होने पर फल गिरने लगते हैं। अतः ब्लिटॉक्स के 0.25 प्रतिशत घोल (250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) का छिड़काव करना चाहिए। **मिलीबग** से बचाव हेतु 2.5 मिली प्रति लीटर क्लोरपायरीफॉस का छिड़काव करें। **फलमक्खी** से बचाव हेतु प्रपंचों (मेथाइल यूजीनॉल 0.1 प्रतिशत व मैलाथिओन 0.1 प्रतिशत) का प्रयोग करें। बोरॉन की कमी (पत्तियों का छोटा होना, फलों का कठोर होना व उनका फटना) होने पर 0.3 प्रतिशत बोरिक्स का पर्णीय छिड़काव करें। पौधों में जिंक की कमी हो जाने पर पत्तियां छोटी एवं पीली लगती हैं, इसके नियंत्रण के लिए आधा किलो जिंक सल्फेट और आधा कि.ग्रा. बुझे चूने का घोल 100 लीटर पानी में बनाकर इसका छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार नई पत्तियों के आने पर करना चाहिए।

नीबूवर्गीय

नीबूवर्गीय फलों में यदि फरवरी में उर्वरक न दिया गया हो तो उसे जरूर दें। उर्वरकों को पौधों से कम से कम 6 इंच की दूरी पर डालें। खाद डालने के तुरंत बाद सिंचाई करें। वृक्षों में सूक्ष्म तत्वों का छिड़काव करें। इसके लिए अर्का सिट्रस स्पेशल (5 ग्राम प्रति लीटर) के 2-2 छिड़काव पुष्पण के पूर्व और पश्चात किए जा सकते हैं। वैकल्पिक रूप से यहाँ उल्लिखित रसायनों यथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट, 2 ग्राम फेरस सल्फेट, 2 ग्राम मैंगनीज सल्फेट, 2 ग्राम मैंगनीशियम सल्फेट, 1 ग्राम बोरिक्स, 6 ग्राम चूना और 10 ग्राम

यूरिया को 1 लीटर में घोलकर तैयार किया जाए घोल का भी छिड़काव किया जा सकता है। अप्रैल माह में पौधों के थालों के नीचे नमी संरक्षण हेतु पलवार लगाएं। पौधशाला के पौधों की नियमित सिंचाई, निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए। बाग में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। मौसम में अधिक तापमान व बढ़ती गर्मी के कारण फलों की बढ़वार रुक सकती है एवं फलों का गिरना एक प्रमुख समस्या होती है। अतः 2, 4 डी (10 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) का छिड़काव करना काफी लाभदायक रहता है। फलों को फटने से बचाने के लिए 100 मिलीग्राम जिब्रेलिक एसिड प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

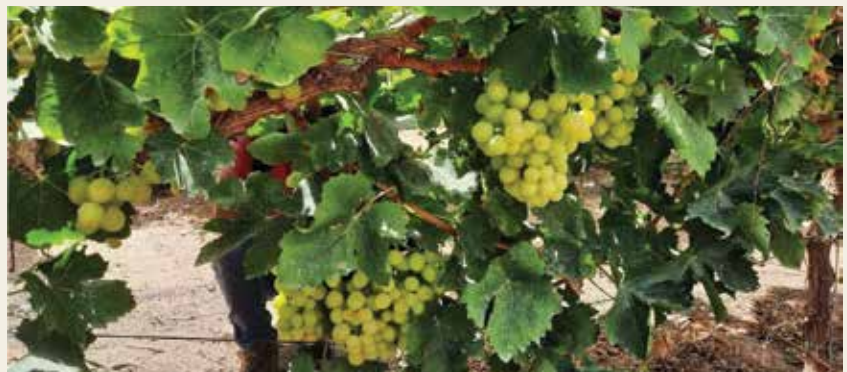
पपीता

मार्च-अप्रैल में पपीते के बीज नर्सरी तैयार करने का काम समाप्त कर लेना चाहिए जिससे रोपण हेतु पौधे जून-जुलाई में उपलब्ध हो जाएँ। एक हैक्टर पौध हेतु 250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। पपीते की पौध को 20x15 सेंटीमीटर माप के 150-200 गेज के पॉलीबैग में मिट्टी:बालू:गोबर की खाद::1:1:1 के मिश्रण में भली प्रकार से तैयार कर सकते हैं। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में रोपण का कार्य मार्च माह में किया जा सकता है। गड्डे भरते समय इस बात का ध्यान रखें कि पानी पौधों के चारों ओर न लगे।

आर्द्र गलन पौधशाला में लगने वाली एक गंभीर व्याधि है, जिसके नियंत्रण हेतु

अंगूर

उष्ण कटिबंधीय जलवायवीय क्षेत्रों (महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु) में अप्रैल माह में आधारीय प्रूनिंग (काँट-छांट) करें। चूँकि अंगूर में फल प्रत्येक मौसम में बेलों से फटने वाली नयी शाखाओं पर लगते हैं अतः पिछले वर्ष की टहनियों को एक निश्चित लंबाई तक छांटना आवश्यक होता है। छांटाई की तीव्रता किस्मों की ओजस्विता पर निर्भर करती है। जैसे ब्यूटी सीडलेस पर 2-3 कलिकाएँ, पर्लेंट पर 3-4, पूसा उर्वशी व पूसा नवरंग पर 4-6, तथा पूसा सीडलेस, किशमिश चार्म व थॉमसन सीडलेस पर 9-12 कलिकाएँ छांटाई पश्चात छोड़ देनी चाहिए। अंगूर की मुख्य शाखा से अनावश्यक पत्तियों को तोड़ दें तथा लता को जाल पर व्यवस्थित कर दें, जिससे कलिकाओं का प्रस्फुटन शीघ्र एवं समान रूप से होने में सहायता मिलती है। अंगूर के एक गुच्छे में 100-120 दाने आदर्श माने गए हैं। अतः, उत्तर भारत में, आवश्यकता से अधिक लगे दानों की छांटाई आवश्यक है। इसके लिए अंगूर के फलों का वांछित आकार व भार बढ़ाने के लिए 50 प्रतिशत से अधिक फूल खिलने की अवस्था पर 30-40 मिलीग्राम जिब्रेलिक एसिड प्रति लीटर पानी में (किस्म के अनुसार) मिलाकर छिड़काव करें। फलों का आकार यदि 3-4 मिलीमीटर का हो जाये तो वलयन का कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है। नई बेलों में सिंचाई 10-15 दिनों में अंतराल पर करते रहना चाहिए।



यदि एन्थ्रेक्नोज (श्यामव्रण) रोग का प्रकोप हो तो बाविस्टिन (0.2 प्रतिशत) अथवा ब्लिटॉक्स (3 ग्राम प्रति लीटर) के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार करना चाहिए। **चूर्णिल फफूंद** की रोकथाम के लिए कैराथेन (0.1 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव अथवा सल्फर की धूल का प्रयोग करना चाहिए। इन महीनों में थ्रिप्स का भी प्रकोप कहीं-कहीं रहता है, इसकी रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड के (100 मि.ली. प्रति 300 लीटर पानी में) घोल का छिड़काव करना चाहिए। अंगूर में एक वर्ष के पौधे के लिए 50 ग्राम नाइट्रोजन व 40 ग्राम पोटाश तथा क्रमशः बढ़ाकर 5 वर्ष या इससे अधिक उम्र के पौधे में 250 ग्राम नाइट्रोजन व 200 ग्राम पोटाश का प्रयोग करें।

मेटालैक्सिल + मैकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी से उपचार करें। पूरे बाग में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई नियमित रूप से कर लेनी चाहिए। पपीता के नवरोपित बागों की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

लीची

मार्च में लीची में फल लगना प्रारम्भ हो जाता है। इस माह 450-500 ग्राम यूरिया और 250-300 ग्राम पोटाश प्रति पौध देना चाहिए। उर्वरक देने के पश्चात सिंचाई सुनिश्चित करें। इसके अतिरिक्त, आवश्यकतानुसार 2 प्रतिशत यूरिया के दो छिड़काव फल की वृद्धि के दौरान उनके आकार और बढ़ावा देने के लिए दिये जा सकते हैं। फलों को गिरने से बचाने के लिए मार्च माह में ही प्लेनोफिक्स (2 मि.ली. प्रति 5 लीटर) अथवा एनएए (200 मि.ग्रा. प्रति लीटर) के घोल का छिड़काव करें। चूर्णिल आसिता रोग के प्रकोप से बचने के लिए लीची में संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें। लीची के नवरोपित बागों की सिंचाई करें। बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें। फलों को फटने से बचाने हेतु अप्रैल माह में, बोरेक्स (4 ग्राम प्रति लीटर) का 15 दिनों के अंतराल पर गुठली बनने के बाद छिड़काव करें। अप्रैल में पौधों की 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए ताकि फलों में नियमित वृद्धि होती रहे। पौधों की नियमित सिंचाई की जाना चाहिए। लीची में माईट के प्रकोप को कम करने हेतु डाइकोफॉल (18.5 ईसी 4 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी में) का छिड़काव लाभकारी रहता है। लीची के बागों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। इसमें फलछेदक की रोकथाम हेतु फूलों के खिलने से पहले निंबोसिडीन 4 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त, रासायनिक नियंत्रण हेतु, इमिडक्लोप्रिड 17.8 एसएल के 0.7-1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का पहला और दूसरा छिड़काव 12-15 दिनों के अंतराल पर करें। तीसरा छिड़काव एमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी के 0.7 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 प्रतिशत ईसी के 0.7 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी में घोल बनाकर करें। मार्च से जून तक नवरोपित पौधों को अत्यधिक गर्मी से बचाने हेतु पुआल अथवा घास-फूस से बने छप्परों से ढक देना चाहिए। छप्पर का मुँह पूर्व की तरफ खुला छोड़ दें।

अनार

मार्च माह में पौधों को लगाने के



अनार

लिए 60 x 60 x 60 सें.मी. आकार के गड्डे पौध-रोपण के एक महीने पूर्व खोदें। तत्पश्चात, गड्डे की ऊपरी मिट्टी में 20 कि. ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद 1 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट .50 ग्राम क्लोरोपायरीफास चूर्ण मिट्टी में मिलाकर गड्डों को सतह से 15 सें. मी. ऊंचाई तक भर दें। गड्डे भरने के बाद सिंचाई करें ताकि मिट्टी अच्छी तरह से बैठ जाए। इसके बाद ही पौधों का रोपण करें।

पौध रोपण की दूरी समान्यतया 5 x 5 या 6 x 6 मीटर एवं सघन विधि में 5 x 3 मीटर होती है। सघन विधि से बाग लगाने पर पैदावार डेढ़ गुना तक बढ़ सकती है। इसमें लगभग 600 पौधे प्रति हैक्टर लगाये जा सकते हैं। अप्रैल माह में तेलिया व्याधि से संक्रमित क्षेत्रों में 0.5 ग्राम स्ट्रेप्टोसायक्लिन + 2.5 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड प्रति लीटर का छिड़काव करें। रोग-रहित क्षेत्रों में केवल 2.5 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड प्रति लीटर का ही छिड़काव करें। हस्त बहार के फलों की तुड़ाई भी मार्च से अप्रैल माह के दौरान की जाती है। नए बागों में प्रतिवर्ष 50 ग्राम यूरिया दो बराबर भागों में डालें। पहली खुराक मार्च महीने में और दूसरी खुराक अप्रैल महीने में दी जाती है। 5 साल के बाद प्रति पौधे 250 ग्राम यूरिया डालना शुरू करें। अनार में फूल आने के तीन मौसम होते हैं, जैसे फरवरी-मार्च (अम्बे बहार), जुलाई-अगस्त (मृग बहार) और सितंबर-अक्तूबर (हस्त बहार)। अम्बे बहार के फल को सुनिश्चित सिंचाई की आवश्यकता होती है। मार्च-अप्रैल की द्विमाही में, थ्रिप्स का प्रकोप भी अधिक होता है, जिसके नियंत्रण के लिए नीले चिपचिपे जाल को 15-20 प्रति एकड़ की दर से लगाएं। इसके अतिरिक्त, थायमेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी 0.5 ग्राम प्रति लीटर या एसिटा मिप्रिड 20

बेर

मार्च में बेर की अधिकतर किस्में पकने लगती हैं। अतः फसल की तुड़ाई कर उचित बिक्री की व्यवस्था करें। प्रायः, तुड़ाई हाथ द्वारा की जाती है। डंडे आदि का उपयोग करने पर फलों को चोट पहुंचती है। जहां तक संभव हो, तुड़ाई सुबह ही की जानी चाहिए। फलों को बड़े, मध्यम और छोटे आकार के समूहों में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। फलों को 'ए', 'बी' और 'सी' ग्रेड या वर्गों में श्रेणीकृत करना चाहिए। 'ए' वर्ग में चमकदार पीले, बड़े एवं मध्यम आकार, एकरूप आकृति तथा बिना किसी विकृति या धब्बेरहित फलों का चुनाव किया जाना चाहिए। इसी प्रकार 'बी' वर्ग के लिए अनियमित पीले या पीले-लाल, बड़े एवं मध्यम आकार, एकरूप आकृति तथा थोड़े विकृति या धब्बेयुक्त एवं 'सी' वर्ग के लिए लाल, अनियमित पीले, मध्यम और छोटे आकार के अधिकांशतः विकृति या धब्बेयुक्त फलों का चयन करना चाहिए। छांटई उपरांत फलों को कपड़े की चादरों, जूट के बोरो, नाइलोन के जालीदार थैलियों, बांस की टोकरियों या लकड़ी या गते के डिब्बों में बाजार भेजा जा सकता है। तुड़ाई के तुरंत उपरांत फलों को 10 डिग्री सेल्सियस पर पूर्वशीतन कर लेने से उनकी निधानी आयु बढ़ जाती है। अप्रैल के अंत तक लगभग सभी पेड़ों के पत्ते गिर जाते हैं और पेड़ काट-छांट के लिए तैयार हो जाते हैं। इस समय सिंचाई रोक देनी चाहिए और पेड़ों के नीचे कचरे की सफाई करवा देनी चाहिए।



बेर

एसपी 0.3 ग्राम प्रति लीटर का नई पत्ती निकलने और फल बनने की अवस्था में छिड़काव करें। जब संक्रमण कम से मध्यम हो तो नीम की गिरी का सत्त 5 प्रतिशत या एजाडिरेक्टिन का छिड़काव 3 मि.ली. प्रति लीटर की दर से करें। कीटारोगजनक जैसे वर्टिसिलियम लेकानी 2 ग्राम प्रति लीटर या मेटारिजियम एनिसोप्लिए प्रति 5 ग्राम प्रति लीटर भी थ्रिप्स के विरुद्ध प्रभावी हैं। साथ ही, वैकल्पिक पोषित फसलों जैसे मिर्च, प्याज, बैंगन आदि की अंतरवर्ती खेती से बचें।

चीकू

मार्च माह में पौधों को 8 से 10 दिनों के अंतराल पर नियमित रूप से पानी डालें तथा सूखी पत्ती, घास या धान के पुआल से भरी एक टोकरी प्रत्येक वृक्ष के थालों में फैलाएं जिससे न केवल मिट्टी की नमी संरक्षित होती है अपितु खरपतवार की वृद्धि भी कम होती है। अप्रैल माह में 5 से 7 दिनों के अंतराल पर या ड्रिप माध्यम से नियमित सिंचाई सुनिश्चित करें। मिट्टी को ढीली और भुरभुरी रखने के लिए निराई-गुड़ाई तथा पलवार लगाने का कार्य किया जाना चाहिए।

अलूचा

मार्च में पुष्पण की क्रिया के दौरान अलूचे के बाग में मधुमक्खियों के 4 से 5 छत्ते प्रति हैक्टर की दर से रखें। बाग में किसी भी कीटनाशी का पुष्पण के दौरान प्रयोग ना करें क्योंकि इससे परागक कीट मर सकते हैं जिससे परागण की क्रिया प्रभावित होगी। पुष्पण के दौरान सिंचाई से बचना है परंतु फल लगने के तुरंत बाद सिंचाई का समुचित प्रबंध भी करना है। ग्रीष्म ऋतु आते ही अलूचा में खरपतवार का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः समय-समय पर इन्हें निकाल देना चाहिए। अलूचे के वृक्षों के समुचित विकास के लिए एक सप्ताह के अंतराल पर नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। जिन जगहों पर सिंचाई की उचित व्यवस्था न हो वहां पेड़ों के नीचे पलवार (मलच) बिछा देनी चाहिए। इसके अन्य लाभ भी हैं, जैसे इसके प्रयोग से



अलूचा

खरपतवार का उगना कम हो जाता है। यह मृदा के तापक्रम को भी ठीक रखती है साथ ही अच्छी गुणवत्ता के फल भी प्राप्त होते हैं।

अलूचे की कुछ किस्मों जैसे ब्यूटी, सांता रोजा और मैथिली में अधिक फल लगते हैं एवं पेड़ों की शाखाएं फलों का भार न सह सकने के कारण टूट भी जाती हैं। इसके लिए बांस या मजबूत लकड़ी का सहारा देना चाहिए। जापानी अलूचा की लगभग सारी किस्मों में बहुत फल लगते हैं। यदि सभी फलों को पेड़ों पर छोड़ दिया जाए तो फल छोटे आकार के होते हैं। अतः फलों की छंटाई कर देनी चाहिए। फलों की छंटाई हाथ से अथवा नेपथलीन एसिटिक एसिड अम्ल 50 पी.पी.एम. (50 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) का छिड़काव करें। पौधों की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। अतः 0.5 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णाय छिड़काव फूलों की पंखुड़ियों के झड़ने से लेकर फलों के पकने के 2 सप्ताह पहले तक किया जा सकता है। जिंक और लौह तत्व की कमी की पूर्ति के लिए 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट और फेरस सल्फेट के घोल का पर्णाय छिड़काव किया जा सकता है चिड़ियों से फलों की रक्षा करनी चाहिए तथा यदि पत्ती खाने वाले कीट का प्रकोप हो तो एमामेक्टिनबेंजोएट 5 एसजी अथवा स्पीनोसैड 45 एससी 0.25 मि.ली. प्रति लीटर के घोल का छिड़काव करें।

सेब

पुष्पण की क्रिया के बाद फल लगने की क्रिया प्रारम्भ होती है। पुष्पण की क्रिया के दौरान बाग में मधुमक्खियों के 4 से 5 छत्ते प्रति हैक्टर की दर से रखें। बाग में किसी भी कीटनाशी का प्रयोग ना करें क्योंकि इससे परागक कीट मर सकते हैं। इससे परागण की क्रिया प्रभावित होगी जो कि कम फलन का कारण बन सकती है। इसी प्रकार पुष्पण के दौरान सिंचाई से बचना है वहीं फल लगने के तुरंत बाद सिंचाई का समुचित प्रबंध भी करना है। इसी समय फलों में कुछ रोगों एवं कीटों का भय हमेशा बना रहता है। तनों की छाल को गर्मी से बचाने के लिए घास से बांध देना चाहिए। इस मौसम में अपस्थानिक शाखाएं (सकर) भी बहुत निकलती हैं। ये पौधों से अधिकाधिक पोषक तत्व लेती हैं। अतः इनको जल्द से जल्द हटा देना चाहिए। इस मौसम में फलों का गिरना भी गंभीर समस्या है। इसे रोकने के लिए नेपथलीन एसिटिक अम्ल का छिड़काव फलों के लगने

के चार से पांच सप्ताह बाद करना चाहिए। चूर्णिल फफूंद का प्रकोप होने पर केराथेन 0.03 प्रतिशत (300 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) या चूना और गंधक को 1:40 के अनुपात में मिलाकर छिड़काव करें। गंधक चूने के उपयोग से रोगों और कीटों दोनों को नियंत्रित कर सकते हैं। यदि पौधों में जिंक की कमी हो तो 0.1 प्रतिशत (1 कि.ग्रा. प्रति 100 लीटर पानी में) जिंक सल्फेट के घोल का छिड़काव करना चाहिए। बोरॉन की कमी होने पर 0.5 प्रतिशत सुहागा (5 कि.ग्रा. प्रति 100 लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें।

स्ट्रॉबेरी

पहाड़ी क्षेत्रों में किसान स्ट्रॉबेरी को केवल नए पौधे तैयार करने के लिए लगा सकते हैं। अतः यदि पौधों पर फूल आ रहे हैं तो उन्हें तुरंत हटा दें। मैदानी भागों में किसान ऐसा न करें। मैदानी भागों में मार्च में स्ट्रॉबेरी की फसल तैयार हो जाती है। इसे तोड़कर, 250 ग्राम के पन्नेट में पैक कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।



स्ट्रॉबेरी

चूंकि अधिकतर फल वृक्षों में इस द्विमाही पुष्पण व फलन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है अतः, कृषि क्रियाओं की दृष्टि से बसंत ऋतु बागवानों के लिए विशेष स्थान रखती है। इस समय बरती गयी ढिलाई का सीधा प्रभाव उत्पादन पर देखने को मिल सकता है। अतः बागों में किए जाने वाले कृषि कार्यों के प्रति सजग रहें।

अगली द्विमाही में भी कुछ आवश्यक कृषि कार्य करने होंगे, जिनकी जानकारी के लिए आपकी अपनी चहेती पत्रिका 'फल फूल' का आगामी अंक अवश्य देखें। ■